शब्दों की धार से हथियार नहीं आभूषण बनाए जाते हैं!

चुनाव-चक्रम

सुरेन्द्र बंसल

खेल अभी शुरू हुआ है लेकिन चुनाव चक्रम में बड़े खिलाड़ियों के साथ नये खिलाड़ियों ने अपना चक्कर चलाकर बड़े-बड़े खेल करना शुरू कर दिये हैं. इसमें बीते हफ्ते सबसे आगे रहे भाजपा के नवोदित नेता वरुण गांधी. वरूण की बोली पर नफरत के बीज तैयार करने के पुरजोर आरोप लगे. वरूण पर आरोप जो इलाहाबाद हाईकोर्ट के मुताबिक प्रथम दृष्टया आपराधिक मुकदमें के लायक बनते हैं. वाकई संगीन है. शब्दों की इतनी धार बनाते समय शायद उसमें राजनीति का निहित सामाजिक संतुलन कहीं खो गया है. इसलिये उसमें लोक लाज जैसे आभूषण कहीं नहीं रहे.

भाजपा के मुस्लिम नेता मुख्तार अब्बास नकवी और शाहनवाज खान यदि नाराज हुए है तो जाहिर है इन नेताओं की सामाजिक भावनाएं आहत हुई है. धार्मिक मुद्दों का पैनापन भाजपा ने अपने शुरूआती दौर में बहुत दिखा है लेकिन फिर भी इतनी कसम नहीं थी कि नकवी और शाहनवाज सरीखे नेता जुड़ने के बजाए खिन्न हो. ये नेता तब भी भाजपा के साथ थे जब गुजरात दंगों में नरेन्द्र मोदी खून के संगीन आरोपों को झेल रहे थे. जाहिर है बेमौके किसी समाज पर वरूण गांधी द्वारा किये गये शाब्दिक हमले से भाजपा के मुस्लिम नेता नाराज हुए है.

दरअसल भाजपा के पास इस चुनाव में पुराने मुद्दों को पुनर्जीवित करने का कोई बहाना नहीं था. जो धार्मिक भावनाओं के आधार पर कुछ लोगों को एकबंध तो कर देता है. ऐसा पीएम इन वेटिंग की मुराद पूरी करने के लिये कुछ था नहीं सिर्फ आस थी. इस लगी हुई आस को वरूण गांधी ने आंधी दी तरफ फैलाया और. अपना नव-कट्टर चरित्र को उजागर दिया. वरूण के जो तेवर थे उससे वहीं नहीं लगता वे अभिनय कर रहे हैं वे वाकई तेजतर्रार और आक्रामक नजर आ रहे थे. इससे दो काम हुए. एक-भाजपा को बदनाम हुए बिना उस मुद्दे को उठाने में कामयाबी जो अब तक हर आम चुनाव में कमी परोक्ष और कभी अपरोक्ष रूप में आ जाती है दो-वरूण गांधी जैसे नव-नेता को राहुल गांधी के सामने उनके समकक्ष लेकिन अधिक आक्रामक और जोशीले रूप में स्थापित होने का मौका मिल गया. आज वरूण गांधी एक चर्चित नेता बन गये. ऐसा इस तरह के आक्रामक मुद्दों के बिना संभव नहीं था. और पीलीभीत जैसे क्षेत्र जो उत्तर प्रदेश का महत्वपूर्ण राजनैतिक इलाका है वहां से कहीं बात से कम से कम उत्तर प्रदेश के मुद्दा बनने की संभावना तो बन ही गई है. जहां मायावती और मुलायमसिंह, अमरसिंह राजनीति के ऐसे बड़े-बड़े दांव खेल रहे हैं. जिसमें कांग्रेस के लिये कहीं जगह ही नहीं बचती हो. तो भाजपा को ऐसे में टक्कर के लिये कुछ मुद्दे तो चाहिए ही अभी तो शुरूआत भर है संकेत श्रीराम मंदिर निर्माण और बाबरी ढांचा ध्वंस तक पुरजोर उठेगा तब समाजवादी पार्टी में आगे कल्याणसिंह मुख्य निशाने पर हो तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए. उत्तर प्रदेश की सीटें इतनी अधिक है कि उससे केन्द्र में सरकार बनाने का बड़ा योगदान रहता है. लेकिन इस समय समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी जैसी बड़ी क्षेत्रीय पार्टी ज्यादा हावी है और कांग्रेस तथा भाजपा के लिये उसके बाद नंबर आता है.

इन दिनों राजनीति में चुनाव चक्रम में चलते सारी नाजायता हावी होकर आपस में टकराव करती है. यही कुछ वरूण की आंधी से हुआ है. जब सामाजिक समरसता बह जाती है. तो उजाड़वन सी स्थिति बन जाती है. इस तरह के मामलों से लोग आपस में टकराव और द्वेष लिये चलने लगते हैं. भला किसी का भी जैसा भी हो लेकिन बुरा समाज का, सामाजिक भावनाओं का, सामाजिक मेल का नहीं होना चाहिए, इतनी समझ राजनीति के नीति-सिद्धांतों पर चलने के लिये निज-अनुशासन के साथ समाहित होना जरूरी है, क्योंकि शब्दों की धार से हथियार नहीं आभूषण बनाए जाते हैं.

वरूण के लफ्जों पर शर्मिंदा है नेहरू-गांधी खानदान

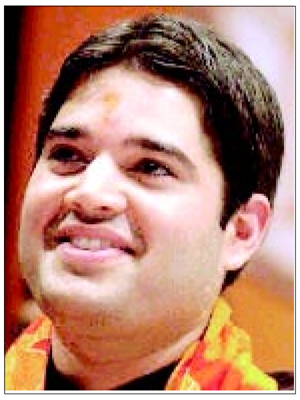

दिवंगत इंदिरा गांधी के पति फिरोज गांधी की कजिन और नेहरू–गांधी परिवार की रिश्तेदार रातू दस्तूर हालांकि वरुण गांधी से जुड़े ताजा विवाद पर कुछ भी कहने से साफ इनकार करती हैं लेकिन अधिक कुरदने पर कहती हैं कि एक युवक है जो बक–बक कर रहा है। इशारे–इशारे में वह राहुल गांधी को उभरता हुआ युवा नेता बताती हैं। रातू को देश की राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं है और वह नेहरू–गांधी परिवार की राजनीतिक दिनचर्या पर भी बात नहीं करना चाहतीं।

मुंबई में खुसरो बाग में रह रही रातू दस्तूर सामातिक कार्यों में व्यस्त रहती हैं। पिछले दिनों एक शादी समारोह में शामिल होने के लिए राहुल गांधी मुंबई आए थे जहां वह अपनी रातू आंटी के साथ थे। रातू से देश की वर्तमान राजनीति पर प्रतिक्रिया जानने की कोशिश की गई तो उन्होंने कुछ भी कहने से साफ इनकार कर दिया।

विवादों में फंसने के डर से वह यह भी कहने से बचती हैं कि देश की बागडोर युवाओं के हाथ में सौंपी जाए या नहीं। अनौपचारिक बातचीत में उन्होंने अपने कमर में दिवंगत इंदिरा गांधी के साथ दिवंगत राजीव गांधी की तस्वीर की तरफ इशारा करते हुए कहा कि हमार आदर्श यही हैं। राहुल का नाम लिए बिना रातू ने कहा कि इस समय एक युवक उभरकर आ रहा है।

उधर, इसी परिवार की एक और महिला और नामचीन लेखिका नयनतारा सहगल साफ तौर पर वरुण के भाषण को भयावह और असम्मानजनक कहने से नहीं चूकतीं। नेहरू की बहन विजयालक्ष्मी पंडित की बेटी नयनतारा ने एक पत्रिका से बातचीत में यह भी कहा कि वरुण बेशक नेहरू–गांधी परिवार की चौथी पीढ़ी से हैं मगर यह नहीं भूलना चाहिए कि वरुण और उनकी मां मेनका बहुत पहले परिवार से टूटकर अलग हो चुके हैं।

नेहरू की इस भानजी को अपने खानदान से वरुण का नाम जोड़ने तक से एतराज है। वह कहती हैं कि वरुण भाजपा में हैं और भाजपा के किसी सदस्य से आप और क्या उम्मीद कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि जब हमारे परिवार की अगली पीढ़ियां धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़ रही थीं, तब वरुण वहां कहां थे।

प्रहलाद की वापसी से भाजपा मजबूत

पहले पेज से जारी...

जबलपुर - प्रदेश के महाकौशल अंचल में चार संसदीय सीटें जबलपुर, मंडला, बालाघाट और छिंदवाड़ा है. इनमें पिछले चुनाव में तीन सीटें भाजपा व एक कांग्रेस ने जीतीं. भाजपा यहां फिर पिछले चुनाव की सफलता को दोहराने में जुटी तो कांग्रेस भी यहां की सीटें भाजपा से छीनने में जुट गई है. महाकौशल की प्रमुख जबलपुर संसदीय सीट के लिये भाजपा ने मौजूदा सांसद राकेशसिंह को प्रत्याशी बनाया है. राकेश सिंह का कार्यकर्ताओं से अच्छा तालमेल है. पिछले सप्ताह तीन कार्यकर्ता सम्मेलन कर उन्होंने चुनाव प्रचार की मजबूत नींव रख दी. जबलपुर लोकसभा चुनाव में 1996 से 2004 तक के 4 लोकसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी ने जबरदस्त विजय हासिल की थी. वर्ष 2004 के चुनाव में राकेशसिंह ने ही कांग्रेस के पूर्व मेयर विश्वनाथ दुबे को एक लाख मतों से हराया था. हाल के विधानसभा चुनाव में भाजपा को जबलपुर लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली 8 विधानसभा सीटों में से 7 सीटों पर 10 से लेकर 15 हजार तक के मतों की बढ़त मिली थी. इसका असर लोकसभा चुनाव में भी दिखेगा. कांग्रेस ने होशंगाबाद के पूर्व सांसद तथा अधिवक्ता रामेश्वर नीखरा को लोकसभा की टिकट देकर चुनावी मुकाबले को रोचक बना दिया है. विधानसभा चुनाव के मतों की सवा लाख की बढ़त की पूंजी जो भाजपा के पास है, कांग्रेस के लिये उस पर पार पाना भी चुनौती होगा.

मंडला- मंडला सीट पर भाजपा ने अपना प्रदेश महामंत्री तथा वर्तमान सांसद फग्गनसिंह कुलस्ते को पांचवीं बार टिकट देकर आदिवासी आस्था को भुनाने की कोशिश की है. पिछला चुनाव उन्होंने करीब 65 हजार मतों के अंतर से जीता था, लेकिन हाल के विधानसभा चुनाव में भाजपा यहां कांग्रेस से 68 हजार मतों से पीछे रही. क्षेत्र के आठ विधानसभा क्षेत्रों में से पांच में कांग्रेस ने बढ़त ली. विधानसभा चुनाव के नतीजों को आधार मानें तो कुलस्ते के लिये सिवनी संसदीय सीट के विलोपन, इसके क्षेत्रों के मंडला में शामिल होने और प्रहलाद पटेल के भाजपा में आने का फायदा फग्गनसिंह उठायेंगे. पिछले चुनाव में मंडला से गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हीरासिंह मरकाम पौने दो लाख मत पाकर दूसरे और कांग्रेस की सावित्री धूमकेती 99 हजार मतों के साथ तीसरे स्थान पर रहे थे.

बालाघाट- महाकौशल की एक और प्रतिष्ठापूर्ण सीट बालाघाट में इस बार फिर दो पुराने प्रतिद्वंद्वी आमने-सामने होंगे. कांग्रेस के पूर्व सांसद विश्वेश्वर भगत का मुकाबला भाजपा के प्रत्याशी के.डी. देशमुख से है जो पांच बार विधानसभा चुनाव के साझा उम्मीदवार बने थे, लेकिन हार गये थे. भाजपा यहां पिछले चुनाव 87 हजार मतों से जीती थी, लेकिन इस बार समाजवादी पार्टी ने पूर्व विधायक किशोर समरीते को मैदान में उतारकर मुकाबले को और दिलचस्प बना दिया है. हाल के विधानसभा चुनाव में भाजपा को कांग्रेस पर 69 हजार मतों की बढ़त मिली. इस बार गोंडवाना प्रत्याशी का बालाघाट में कोई जोर नहीं रहेगा.

छिंदवाड़ा- छिंदवाड़ा संसदीय सीट पर इस बार भाजपा कमलनाथ का विजयरथ रोकने का प्रयास करेगी. कमलनाथ इस सीट से सात बार निर्वाचित हो चुके हैं. पिछला चुनाव वे प्रहलाद पटेल से 63 हजार 708 मतों के अंतर से जीता पाए थे. हाल के विधानसभा चुनाव में छिंदवाड़ा सीट पर भाजपा ने 3 हजार 634 मतों की बढ़त ली तथा कांग्रेस के गढ़ में सेंध लगा दी. साल में कांग्रेस 4 विधानसभा सीटों पर कांग्रेस पीछे रही. कमलनाथ के खिलाफ प्रत्याशी उतारने में भाजपा में गहन विचार विमर्श चल रहा है. यहां से भाजपा ने पूर्व विधायक मारोत राव खबसे को प्रत्याशी बनाने का मन बनाया है.

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८